शहीद गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अजनाला

अखिल भारतीय सद्भावना समिति, हरिद्वार

मुद्रक : संस्कृति मुद्रणालय, रानीगली, भूपतवाला, हरिद्वार मो० 09319039804

सन् 1857 के अमर शहीदों वाला कुआँ अजनाला अमृतसर पंजाब

सन् 1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम में

ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा शहीद किये गये 282 वीर भारतीय सैनिकों की अस्थियाँ 157 वर्ष बाद **28 फरवरी 2014 शुक्रवार प्रातः 10 बजे** पूर्ण सम्मान तथा धार्मिक विधि विधान पूर्वक निकाली जा रही हैं। इस राष्ट्र वन्दना के कार्य में सम्मलित होकर श्रद्धांजलि अर्पित करें।

बाहर से आने वाले श्रद्धालुओं के भोजन तथा आवास की व्यवस्था गुरुद्वारा साहिब में की गई है।

निवेदक

अखिल भारतीय सद्भावना समिति, हरिद्वार

दिवाकर श्री (राष्ट्रीय महासचिव) मो० 08126644331

प्रभाकर शर्मा मो० 09897213181

सुरेन्द्र कोछड़ (इतिहासकार) मो० 09356127771

शहीद गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी, अजनाला

काबल सिंह (सचिव) मो० 08146461333

अमरजीत सिंह सरकारिया (प्रधान)

सन् 1857 की जंग-ए आजादी के शहीदों की यादगार

अजनाले का शहीदी कुआँ

10 मई 1857 को मेरठ छावनी से ईस्ट कम्पनी के विरुद्ध शुरु हुई भारतीय सिपाहियों के विद्रोह ...त पंजाब की मुख्य तथा इकलौती यादगार आज भी अमृतसर की तहसील अजनाला में मौजूद ...टिश अधिकारियों के हाथों भारतीय सैनिकों के हुए नरसंहार की गवाही दे रही है। अजनाला ...ग में अमृतसर से 24 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

13 मई 1857 की सुबह लाहौर की मियां मीर छावनी में परेड के दौरान लैफ्टीनेंट कर्नल टेलर ...ड में नियुक्त बंगाल नेटिव इन्फैंट्री की 26 रेजीमेंट सहित पैदल फौज की 16 नं., 49 नं. तथा ...ट कैलवरी के सिपाहियों से हथियार ले लिए गये। जिसके बाद इन में से बंगाल नेटिव इन्फैंट्री ...रेश हुकूमत के विरुद्ध बगावत कर दी और रैजीमेन्ट का सिपाही प्रकाश सिंह उर्फ प्रकाश पांडे ...ई 1857 की रात छावनी में नियुक्त मेजर स्पैंसर का उसी की तलवार से कत्ल करके अपनी ... साथी सिपाहियों सहित वहां से भाग निकला। इस दौरान एक अंग्रेज तथा दो अन्य भारतीय अधि... इन हिन्दुस्तानियों के हाथों मारे गए।

हिन्दुस्तानी सिपाहियों का यह दस्ता 31 जुलाई की सुबह 8 बजे अजनाला के पास रावी नदी के ...व डड्डीयां के बाल घाट पर पहुँचा। वहां उन्होंने गांव के जमींदारों से पैदल नदी पार करने का ...ा। जमींदारों ने उन दो दिन के भूखे-प्यासे सिपाहियों को रोटी-पानी का लालच देकर वहीं रोक ...र गांव के चौकीदार सुल्तान खां के हाथ यह सूचना सौंढ़ियां (मौजूदा समय तहसील अजनाला ...का गांव) के तहसीलदार दीवान प्राण नाथ को भेज दी। तहसीलदार ने उसकी सूझबूझ से खुश ...से तुरन्त नकद इनाम दिया और बागी सिपाहियों के खात्मे के लिए ईस्ट इण्डिया कम्पनी के ...ों व प्रशासनिक अधिकारियों को एकत्रित कर लिया। साथ ही प्राण नाथ ने यह संदेश अमृतसर ... कमिश्नर फ्रेडरिक हेनरी कूपर को भी भिजवा दिया। थाने और तहसील में जितने भी शस्त्रधारी ...थे, तहसीलदार ने उन्हें दो नौकाओं में नदी पर बागी सिपाहियों के खात्मे के लिए भेज दिया। मौके ...ते ही तहसीलदार के सिपाहियों ने निहत्थे व थके-मांदे सिपाहियों पर फायरिंग शुरु कर दी। ...50 के करीब सिपाही मौके पर शहीद हो गये और 50 के करीब नदी में कूद गये।

सायं 5 बजे फ्रेडरिक एच. कूपर जमींदारों और गांव के लोगों की सहायता से गांव डड्डीयां से ...कड़े गए 282 हिन्दुस्तानी सिपाहियों को रस्सों से बांधकर आधी रात के समय अजनाला लाया। ...237 सिपाहियों को थाने में बंद करने के बाद शेष 45 को जगह की कमी के चलते अजनाला ...बनी तहसील के छोटे से बुर्ज में ठूँस-ठूँस कर भर दिया गया। योजना के तहत इन्हें 31 जुलाई को ...फांसी पर चढ़ाया जाना था, परन्तु भारी बरसात के कारण फांसी अगले दिन के लिए स्थगित कर ...एक अगस्त को बकरीद वाले दिन सुबह पौ फटते ही 237 सैनिकों को 10-10 करके थाने से बाहर ...कर थाने के सामने वाले मैदान में लाया गया। उनकी छाती में निशाना लगाने के लिए 50 बंदूकच...हियों ने पोजीशन ले रखी थी। कूपर का इशारा मिलते ही हिन्दुस्तानी सिपाहियों पर गोलियां दागनी ... दी गईं। उनके पास खड़े गांव के सफाई सेवक लाशों को घसीट कर एक-दूसरे के ऊपर फेंक ...सुबह 10 बजे तक अजनाले के मैदान में 237 सिपाहियों की लाशों का बड़ा ढेर लग चुका था। ...ने में बंद सभी सिपाही शहीद कर दिए गए तो तहसील के बुर्ज में से सिपाहियों को बाहर निकाला गया। जब बुर्ज का दरवाजा खोला गया तो उस के अन्दर ठूँस ठूँस कर भरे 45 सिपाहियों में से कुछ तो कई दिनों की भूख-प्यास, थकावट तथा बुर्ज में दम घुटने के कारण पहले ही दम तोड़ चुके थे तथा कुछ अभी बेहोशी की हालत में थे उनको घसीटते हुए बुर्ज से बाहर निकाला गया। कूपर ने अपने सिपाहियों को हुक्म दिया कि गोलियों से मारे गए सैनिकों के साथ-साथ अर्ध-मूर्छित तथा सिसक रहे सिपाहियों को थाने के मैदान के पास स्थित विशाल सूखे कुएँ में फेंक कर कुएँ को ऊपर तक मिट्टी से भर दिया जाए।

इस घटना का जिक्र करते हुए कूपर ने अपनी किताब "क्राईसिस इन द पंजाब" में उक्त कुएँ को पूर्बियों का खूंह, कालियों का खूंह तथा कालों का खूंह नाम से सम्बोधित करते हुये लिखा है-हमारे सिपाहियों ने बागी थके -मांदे सिपाहियों पर गोलियां चलानी शुरु कर दीं। उनकी गिनती 500 के करीब थी। वे भूख और थकावट से इतने निर्बल हो चुके थे कि नदी की तेज लहरों के आगे वे ठहर न सके। रावी का पानी उनके खून से लाल हो गया था। गिरफ्तार किए गए सिपाहियों को नदी पर लाने के लिए उन्हें रस्सों से जोर से बांधा गया तथा उनके गलों में पड़े माला/जनेऊ तोड़कर पानी में फेंक दिए गए। उस समय बहुत तेज बारिश हो रही थी। उन जिन्दा पकड़े गए 282 सिपाहियों में कुछ सेना के हिन्दुस्तानी अफसर भी थे।

पूरे 157 वर्ष तक तहसील अजनाला के उक्त कुएं ने अपनी पहचान और आत्मा की शांति के लिए तरस रहीं जंग ए आजादी सन् 1857 के अंतिम 282 भारतीय शहीदों की मृतक देहों को अपनी आगोश में संभाले रखा, जो 28 फरवरी 2014 को पूर्ण धार्मिक विधि विधान सहित कुएं में से निकाली जा रही हैं। आजाद भारत की किसी भी सरकार ने कुएं में दफन इन हिन्दुस्तानी फौजियों की मृतक देहों को आजतक बाहर निकालने का प्रयास नहीं किया। बल्कि जब देश आजाद हुआ तो भारतीयों ने अपनी गुलाम मानसिकता के चलते उक्त कुएं को अंग्रेजों द्वारा दिये कालियां वाले खूंह नाम से ही संबोधित करने का सिलसिला जारी रखा।

हम शहीदी कुएं से संबंधित 11 सदस्यीय कमेटी के बहुत आभारी हैं जिन्होंने हमारे निवेदन करने पर कुएं में से सम्मान सहित शहीद सिपाहियों की अस्थियां बाहर निकालकर माँ गंगा में विसर्जित करने तथा शहीद स्थल का नाम बदलकर गुरुद्वारा शहीदगंज-शहीदी खूंह रख दिया। इसके बाद कमेटी ने एक सफल प्रयास करके इतिहासिक दस्तावेजों में की गई निशानदेही के आधार पर 3 दिसम्बर 2012 को खुदाई कर शहीदी कुएं को खोज निकाला। कुआं धरती की ऊपरी सतह से 10 फुट नीचे था और अस्थियां उसके 11.5 फुट नीचे मौजूद हैं। 28 फरवरी 2014 को गुरुद्वारा शहीद गंज-शहीदां वाला खूंह कमेटी द्वारा देशवासियों की उपस्थिति में उक्त शहीदों की अस्थियां कुएं में से पूर्ण सम्मान तथा धार्मिक विधि विधान पूर्वक निकाली जाएगी। उनका डी.एन.ए. जांच कराए जाने के बाद अजनाला में ही उनका अन्तिम संस्कार किया जायेगा। तदुपरान्त् विशाल शोभायात्रा के रूप में ये अस्थियां माँ गंगा में विसर्जित करने के लिए हरिद्वार तथा श्री गोईंदवाल साहिब ले जायी जायेंगी। शहीदी कुएं के पास ही शहीदों की स्मृति में एक आलीशान शहीदी स्मारक तथा रावी नदी के पार गांव डड्डीयां में शहीदी स्थान पर यादगारी स्मारक का निर्माण करवाकर शहीदों का सम्मान किया जायेगा। यह उन गुमनाम शहीदों के प्रति प्रत्येक भारतवासी के द्वारा दी गई सच्ची श्रद्धांजलि होगी। जिन्होंने अपना सर्वस्व देश हित में बलिदान कर दिया।